

ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ, ମନ୍ତ୍ରି - ଧର୍ମ ପଞ୍ଜଳି

ଏହାଙ୍କ ଗନ୍ଧିଲା ଆତି ଜୀବନାମ ହଣ୍ଡନା ଗନ୍ଧିଲା.

ତତ୍ସୁନ୍ଦରମ् ।

ତେ ପାତ୍ରେ ଦାନଶାଲାୟାଂ ସତଃ ।

ତାନି ମ୍ଲାୟନ୍ତି ।

ସା କୁସୁମାନି ଅବଚିନୋତି ।

ତେ ଧର୍ମପାଠଶାଲାଂ ଆଗଚ୍ଛତଃ ।

ତା: ଜାତିକରୀତଂ ଗାୟନ୍ତି ।

ସଃ ଘଣ୍ଠାଂ ନାଦ୍ୟତି ।

ତୌ ବିହାରଂ ଗଚ୍ଛତଃ ।

ତେ ପିଣ୍ଡାୟ ଚରନ୍ତି ।

ଅହଁ କାନ୍ଦନା ଅସିମ ।

ଆଵା ପରିତ୍ରାଣଦେଶନାୟ ଗଚ୍ଛାଵଃ ।

କ୍ୟାଂ ଚ්ଚିଵରାଣି ପ୍ରକ୍ଷାଲ୍ୟାମଃ ।

ତ୍ଵଂ ସତ୍ୟ ବଦ ।

ସୁଵାମ୍ ଆରୋଗ୍ୟଶାଲାଂ ଗଚ୍ଛଥଃ ।

ଯୁଧ୍ୟ ଗ୍ଲାନପ୍ରତ୍ୟୁଷଂ ସମ୍ପାଦ୍ୟଥ ।

- ଶୀଘ୍ର ଜ୍ଞାନଦିର୍ଯ୍ୟ.

- ଶୀଘ୍ର ଦେବ ଦ୍ୱାନଶାଲାଲୋକରେ ଆତି.

- ଶୀଘ୍ର ମୌଳିକ.

- ଶୀଘ୍ର ଦେବଦେଶନା ଧର୍ମପାଠାଲାରେ ଶୀଘ୍ର.

- ଶୀଘ୍ର ଶାନ୍ତିକାରୀଯ ଗାୟନା କରନ୍ତି.

- ଶୀଘ୍ର କରନ୍ତି କବି ରଜ୍ଜକ କରନ୍ତି.

6.1 ଧର୍ମପାଠ

ଜ୍ଞାନଜ୍ଞ ଜୀବନାମ ଶିଖିବାରେ ପ୍ରତିବନ୍ଦିନୀ.

୧. ଧର୍ମ ଭାଷତି ।

୨. ପ୍ରଦୀପାନି ଜ୍ଵଳ୍ୟାମଃ ।

୩. ପାତ୍ର ଗୃହ୍ଣାତି ।

४. मञ्चे शेते ।
५. बोधिअङ्गनं पवित्रयामि ।
६. परित्राणदेशनं शृणवन्ति ।
७. पुण्यकर्माणि करोति ।
८. दारकं लालयति ।
९. प्रवृत्तिपत्रं क्रीणन्ति ।
१०. प्रत्यशतकं पठतः ।

(तौ, सः, सा, त्वं, अहं, ते, वयं)

6.2 અહિંકાર



माता आरक्षकः च

पुत्रः - मातः , कः अयं ?
माता - पुत्र , अयं भटः ।
पुत्रः - भटः किं करोति ?
माता - स अस्माकं देशं रक्षति ।
पुत्रः - सत्यम् , तस्य वस्त्रं विचित्रम् ।
अहं च देशारक्षकः भविष्यामि ।
माता - अस्तु , तव प्रार्थना सफला भवतु ।

ඉහත ජිවාද භාඛනය කියවන්න.

6.3 අභ්‍යාසය



ଶିଳ୍ପାଳୀର ନଗନ୍ତନ.

अयम् अस्माकं विहारम् । अहं प्रतिदिनं तत्र गच्छामि । तं विचित्रम् । तत्र चैत्यं भवति । तस्य अभिमुखे उपासिका तिष्ठति । सा चैत्यं वन्दति । तस्याः दुहितरौ बोधिअङ्गणं पवित्रयतः । तौ श्वेतवस्त्रैर्विलसतः । दक्षिणात्ये श्रामणेराः दूश्यन्ते । ते तं बोधिद्वामं वन्दन्ति । अस्मिन् बोधिद्वामे बहवः धजाः विलसन्ति । तानि वायुना चलन्ति । इयम् आश्रम भूमिम् अस्माकं चित्तं समाधियति । तस्मात् सर्वे दायकाः अत्र आगच्छन्ति । ते वन्दन्ति, चङ्गमन्ति । केचित् यतीन्द्रेण सार्थं धर्मसंभाषणं कुर्वन्ति ।

6.1 ଶିଳ୍ପାଳୀରଙ୍କତା

କିମିଲିନ୍ଦନ, ଲିଲାଲୋଦୁରନ କରନ୍ତନ.

| ଅଜ୍ଞମଦ୍ଦ ଜଳିଦା | | | |
|----------------|-----------|-----------------|------------|
| ବିଭିନ୍ନ | ଏକବଚନ | ଦ୍ଵିଵଚନ | ବହୁଵଚନ |
| ପ୍ରଥମା | अहम् | आवାମ् | वୟମ् |
| | ॐ | ଅତି ୧୯୬ନ | ଅତି |
| ଦ୍ଵିତୀୟ | ମାମ्, ମା | ଆଵାମ୍, ନୌ | ଅସ୍ମାନ୍,ନଃ |
| | ମୋ | ଅପ ୧୯୬ନା | ଅପ |
| ତୃତୀୟ | ମ୍ୟା | ଆଵାଭ୍ୟାମ୍ | ଅସ୍ମାଭିଃ |
| | ମୋ ଲିଖିନ୍ | ଅପ ୧୯୬ନା ଲିଖିନ୍ | ଅପ ଲିଖିନ୍ |

| | | | |
|---------|------------|-------------------|---------------|
| चतुर्थी | मह्यम्, मे | आवाभ्याम्, नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| | अ० | अपि देदेनाऽ | अपि |
| पञ्चमी | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| | मैगेन | अपि देदेनागेन | अपेन |
| षष्ठी | मम, मे | आवयोः, नौ | अस्माकम्, नः |
| | मैगें | अपि देदेनागें | अपें |
| सप्तमी | मयि | आवयोः | अस्मासु |
| | मा केरेहि | अपि देदेना केरेहि | अपि केरेहि |

| छ्रुश्छमद् ज्ञविद्य | | | |
|---------------------|---------------|------------------------|-----------------|
| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| | न्नुङ् | न्नुङ्ला देदेना | न्नुङ्ला |
| द्वितीया | त्वाम्, त्वा | युवाम्, वाम् | युष्मान्, वः |
| | न्नुङ् | न्नुङ्ला देदेना | न्नुङ्ला |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| | न्नुङ् विषिन् | न्नुङ्ला देदेना विषिन् | न्नुङ्ला विषिन् |
| चतुर्थी | तुभ्यम्, ते | युवाभ्याम् | युष्मभ्यम्, वः |
| | न्नुङ्ला | न्नुङ्ला देदेनाऽ | न्नुङ्लाऽ |

| | | | |
|--------|-----------------|--------------------------|-------------------|
| पञ्चमी | त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् |
| | न्नृष्टिगेन्तः | न्नृष्टिला देदेनागेन्तः | न्नृष्टिलागेन्तः |
| षष्ठी | तव, ते | युवयोः, वाम् | युष्माकम्, वः |
| | न्नृष्टिगें | न्नृष्टिला देदेनागें | न्नृष्टिलागें |
| सप्तमी | त्वयि | युवयोः | युष्मासु |
| | न्नृष्टि केरेहि | न्नृष्टिला देदेना केरेहि | न्नृष्टिला केरेहि |

अहंसा स इदं हा उपकारक आ

आम आ

क्षिया आ

| | | | | | |
|--------|---|----------|----------|---|----------------|
| अङ्गण | - | मिद्दिल | ज्वलति | - | द्लैवदि |
| अभिमुख | - | छट्टीरिय | गृह्णाति | - | गेनिदि |
| | | | शोते | - | नीदिदि |
| | | | लालयति | - | नालवदि |
| | | | क्रीणाति | - | मिलते गेनिदि |
| | | | विलसति | - | बबलदि |
| | | | चंक्रमति | - | सक्तमन्ते करदि |

हाविनयात

प्रथमे नार्जिता विद्या - द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं - चतुर्थे किं करिष्यति ॥

पल्लु व (लमा कालये दी) उगेनीम नेाल्ला, देवन्नु व (तरैन कालये दी) दिनय रस्ते नेाकेव, तेवन्नु व (वयस्तेव व्व विव) ऐन न्नृपदवा जिव जिवृवैनी व (मरणीन अप्प) कुमक्षे करन्नेन्दे द ?